लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

website: www.pawanprawah.com

पवन प्रवाह

सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह

डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17

वर्ष 03 अंक 35 लखनऊ। सोमवार 22 से 28 मई-2017

e-mail-pawanprawah@gmail.com

मूल्य : तीन रूपये पृष्ठ-16

प्राणिक ऊर्जा-क्या हैं इसके फायदे

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

भारतवर्ष में पौराणिक काल से आजतक जन-मानस के सामान्य क्रिया कलापों में किसी भी अस्वस्थता अथवा असाध्य रोगों को दूर करने हेतु जड़ी-बूटियों के उपयोग के साथ-साथ समर्पण भाव व अंतर्मन से ईश्वर की पूजा व अर्चना भी करने की प्रथा चली आ रही है। क्या हमने इस पर गौर से जानने की कोशिश की इससे मन को मात्र संतोष ही मिलता है या इसका कोई वैज्ञानिक आधार भी है। चूंकि किसी भी रोग के उपचार के लिए 'दवा व दुआ' दोनों को अपनाने की चर्चा हमारे ग्रंथो व इतिहास के पन्नों में मिलती है, अतः इसका अध्ययन गहराई से किये जाने की नितांत आवश्यकता प्रतीत होती है। इसी क्रम में, इस अंक में भौतिक शरीर में ऊर्जा का संचार व उससे उत्पन्न ऊर्जा (आभा) जो शरीर से अलग कुछ क्षेत्र तक प्रभावी रहती है के क्या लाभ है, प्राणिक ऊर्जा (शक्ति) किसे कहते हैं और इससे क्या लाभ होता है, के सम्बन्ध में बताया गया है ।

(भाग-01)

1. प्राणिक ऊर्जा व आभा

हमारी दृश्यमान भौतिक शरीर और शारीरिक ऊर्जा एंव आभा, चूंकि एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं, अतः यदि एक प्रभावित हो जाता है तो उससे दूसरा भी प्रभावित हो सकता है। इस प्रकार विज्ञान के दृष्टकोण से प्राणिक ऊर्जा (हीलिंग) की अवधारणा, मानव की शारीरिक उर्जा तथा उसके आभा पर आधारित है जिसे हम कोई एक स्पर्श चिकित्सा अथवा प्राणिक उर्जा थेरेपी की संज्ञा दे सकते हैं।

प्राणिक ऊर्जा (हीलिंग)-दो बुनियादी सिद्धान्तों पर कार्य करती है:-

अ. शारीरिक ऊर्जा अथवा आभा को बढ़ाना।

ब. अस्वस्थ आभा की सफाई।

अतः हम किसी के अस्वस्थ शरीर के प्रभावी क्षेत्र से अवरूद्ध एवं खराब ऊर्जा को प्राण व जीवन ऊर्जा के माध्यम अथवा क्रियाशील साधन के माध्यम से उसकी सफाई कर सकते हैं अब हमें समझने की आवश्यकता है कि भौतिक शरीर के चारों तरफ आभा उत्पन्न रहती है इसका क्षेत्र प्रत्येक व्यक्ति के प्राण ऊर्जा के अनुसार अलग-अलग होता है। अब आभा क्या है इसे जानने की आवश्यकता है।

1.1 आभा क्या है?

भौतिक शरीर के आसपास मौजूद प्रत्येक सूक्ष्म शरीर की अपनी अनूठी आवृत्ति होती है। वे एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, और एक दूसरे और व्यक्ति की भावनाओं, सोच, व्यवहार और स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। आभा सात स्तरों/परतों से मिलकर आती है। इसलिए आभा परतों में से किसी एक में असंतुलन की स्थिति दूसरों की असंतुलन को जन्म देती है।

इसको इस प्रकार से समझा जा सकता है कि आभा एक चमकीली ऊर्जा है, जो शरीर के चारों ओर से घेरे के रूप में भौतिक शरीर और इसके पार लगभग चार से पांच इंच तक दृश्यमान होती है जिसकी सात परते होती है। इसको इस रूप में समझाया जा सकता है कि किसी भी रोग या बीमारी के पहले इसका असर आभा में पहुचता है और उसके बाद वह भौतिक शरीर में फैल जाता है। मास्टर चाओ काक सुई जिनकी प्राणिक विज्ञान पर कई लिखित पुस्तकों में समझाया गया है कि प्राणिक ऊर्जा व आभा से किसी भी प्रदूषित ऊर्जा का अध्ययन कर, उसे भौतिक शरीर में फैलने तथा उससे उत्पन्न होने वाली बीमारी को रोकना सम्भव है।

अब इसे विज्ञान के माध्यम से समझने के लिए, हम चुम्बक व उसके चुम्बकीय क्षेत्र का उदाहरण ले रहे हैं। हम जानते हैं कि कोई स्थायी चुम्बक अपने भौतिक आकार के अलावा भी अपने चारों तरफ एक चुम्बकीय क्षेत्र तैयार करता है तथा इस क्षेत्र में दूसरे समान प्रकार के चुम्बकीय क्षेत्र को दूर भगाने एवं अवरोधित करने की क्षमता होती है। परन्तु बाहरी चुम्बकीय क्षेत्र यदि अधिक प्रभावी होता है तो पहले चुम्बकीय क्षेत्र में प्रवेश कर इसकी शक्ति को क्षीण कर देता है यही स्थिति भौतिक शरीर व आभा की होती है जब वह दूसरी प्रदूषित आभा के प्रभाव से क्षीण होकर शरीर में रोग पैदा कर देती है।

1.2 सफाई क्यों आवश्यक है?

सफाई एक बहुत महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो प्रदूषित/रोगग्रस्त ऊर्जा व ऊर्जा चैनलों में रुकावटों को दूर करने और प्रभावित हिस्से या पूरे शरीर से निकालने की भूमिका निभाता है। प्राणिक ऊर्जा से शरीर में नए प्राण या जीवन ऊर्जा तैयार कर सफाई की जाती है। यदि यह सफाई अथवा मरहम ठीक से नहीं किया है, तो उसके बाद उर्जित शरीर में बेचैनी का स्तर बढ़ सकता है।

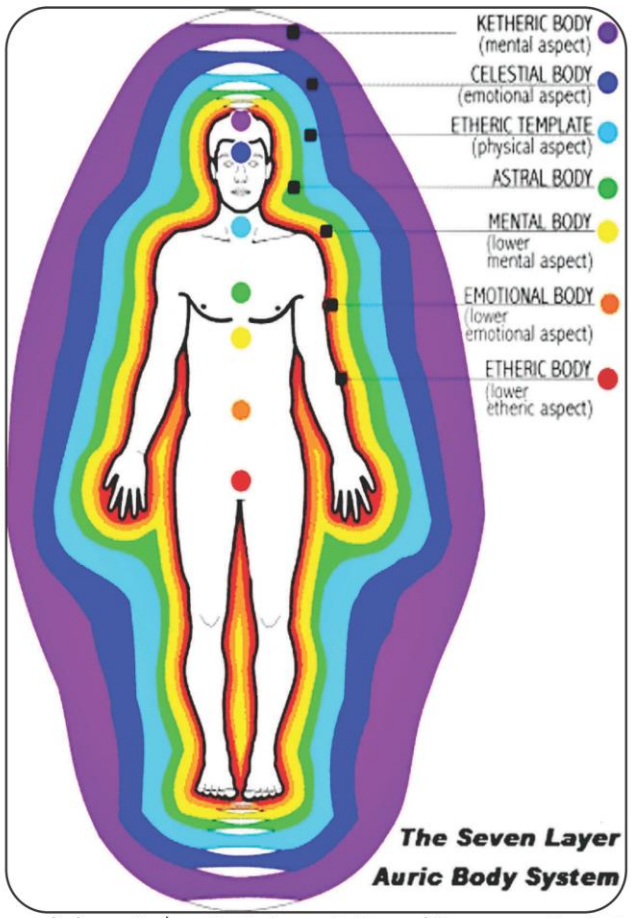

1.3 प्राणिक हीलिंग के क्या लाभ हैं?

प्राणिक हीलिंग का उपयोग मामूली से मामूली उपचार में तथा प्रमुख अथवा असाध्य रोगों को ठीक करने के लिए भी किया जाता है। इस क्रिया से कुछ ही सत्रों में मामूली रोगों को ठीक किया जा सकता है। परन्तु प्रमुख अथवा असाध्य रोगों को ठीक करने में, नियमित उपचार कई सत्रों में करने से, कुछ महीने भी लग सकते है। प्राणिक हीलिंग दवाओं और डॉक्टरों के लिए एक पूरक है। इसको हमेशा रोगी के चिकित्सासत्र व अपने चिकित्सक से निर्धारित दवाओं के साथ-साथ जारी रखने की सलाह दी जाती है। चूंकि हमारे शरीर को पहले से ही स्व-ऊर्जा से क्रमादेशित किया जाना रहता है, अतः प्राणिक हीलिंग चिकित्सा तीन से चार बार अथवा सामान्यतः इसकी अधिक दरे भी बढ़ाई जा सकती है।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि एक प्राणिक हीलिंग/मरहम लगाने वाले को अपनी स्वयं की ऊर्जा, चिकित्सा उद्देश्य के लिए उपयोग नहीं करना चाहिए। यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है जिसका उल्लेख करना आवश्यक था। इसके बजाय वह प्राण ऊर्जा का उपयोग, ब्रह्माण्ड के स्रोतों से अथवा आसपास के पर्यावरण से करना चाहिये। इसलिए, एक प्राणिक हीलिंग/मरहम लगाने वाले को एक पम्प के रूप में इस कार्य को ब्रह्माण्ड के स्रोतों से करना चाहिए, बजाय वह अपनी शारीरिक ऊर्जा से करे। ऊर्जा और प्राण को कभी भी एक सुराही के पानी की तरह खाली नहीं किया जाना चाहिये।

1.4 क्या आप प्राणिक हीलिंग/मरहम लगाने वाले बन सकते हैं?

प्राणिक हीलिंग सीखने व उसको उपयोग करना एक सरल पद्धति है जिसमें कुछ बुनियादी तकनीकों और सिद्धांतों को सीखने की आवश्यकता होती है तथा इसे कुछ सत्रों में सीखा जा सकता है। किसी को भी प्राणिक हीलिंग जानने के लिए एक औसत बुद्धि, एक औसतन ध्यान केंद्रित करने की क्षमता और हठ, एक विवेकी और खुले दिमाग की जरूरत है। अगले अंकों में स्कैनिंग के सरल निर्देशों व प्रक्रियाओं के संबंध में जिसमे उर्जा प्राप्त करना, सफाई करना और स्थिरता पैदा करना, बताया जायेगा। उन सरल निर्देशों का पालन कर हम प्राणिक उर्जा से लोगों को लाभ पहुंचाने का नेतृत्व कर सकते हैं।

1.5 प्राणिक हीलिंग सीखने के क्या फायदे है?

प्राणिक हीलिंग सीखने के उपरांत आप एक आत्म चिकित्सक और दूसरों की बीमारियों को भी ठीक कर सकते हैं अथवा राहत दे सकते हैं। इसमें से कुछ उपचार बहुत ही आसान हैं, जैसे-बच्चों के बुखार, मामूली घाव अथवा उसके आसपास के दर्द को समाप्त करना, सिर-दर्द को ठीक करना सम्मलित है। इसके अलावा गैस दर्द, दांत दर्द और मांसपेशियों के दर्द में भी तुरंत लाभ पहुंचाया जा सकता है।

भारतीय पौराणिक पद्धति में, अभी भी गांवों व देहातो में यह देखने को मिलता है कि छोटे बच्चो को उनके दस्त, पेट दर्द, उल्टी आना, बेचैनी पैदा होना अथवा नजर दूर करने आदि में मंत्रो के उच्चारण के उपरांत मुंह से रोगी के ऊपर हवा फेकर उपचार बहुत कारगर पाया जाता है। इसके साथ-साथ सर्पदंश अथवा विच्छूदंश के लिए भी झाड़-फूंक की प्रक्रिया से कुछ हद तक लाभ पहुंचाया जाता है। इसी प्रकार गंभीर रोगों से प्रभावित लोगों को दवा के साथ-साथ दुआ की सलाह भी ग्रंथों व इतिहास के पन्नों में मिलती है। इससे यह स्पष्ट है कि भारतवर्ष में इस सूक्ष्म पद्धति, जिसे आज हम प्राणिक उर्जा हीलिंग कह रहे हैं, पहले से ही ऋषियों/संतों द्वारा वैज्ञानिक शोध के उपरान्त जानकारी प्राप्तकर साधारण जनमानस में क्रिया के रूप में प्रचारित/लागू की गयी थी।

अगले अंक में हम प्राणिक उर्जा, चक्र, भौतिक शरीर के आभा के सात परतों की जानकारी प्राप्त करेंगे।

क्रमशः अगले अंक-2 को पढ़े....